एकता परिषद राहत अभियान

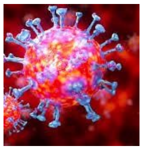

राहत कार्य संस्करण क्रमाक – 4 **दिनांक – 7 से 11 अप्रेल 2020**

सेवा परमो धर्मः – कोरोना संकट के बीच एकता परिषद का राहत अभियान

प्रिय मित्रों,

जय जगत।

2012 में जन सत्याग्रह पदयात्रा के दौरान आगरा में भारत सरकार के साथ हुए शांतिपूर्ण समझौते के बाद कुछ साथियों का प्रस्ताव था कि महात्मा गांधी व कस्तुरबा गांधी के 150वीं जन्म शताब्दी के अवसर पर गांधी जी के संदेशों के प्रचार प्रसार तथा वैश्विक शांति व न्याय के लिए नई दिल्ली के राजघाट से स्वीटजरलैण्ड की राजधानी जिनेवा तक एक वैश्विक पदयात्रा का आयोजन किया जाए।

इस सुझाव के मद्देनजर जिल बहन के साथ मैंने पिछले पांच वर्षो से कई देशों की यात्रा करके वैश्विक पदयात्रा की तैयारी की। आप सभी जानते ही हैं कि 2 अक्टूबर 2019 को राजघाट से जय जगत पदयात्रा प्रारंभ हुई और 165 दिन में 5500 किमी की पदयात्रा जब आर्मीनिया देश से गुजर रही थी तब खबर आयी कि कोरोना कोविड 19 बीमारी की महामारी तेजी से पूरी दुनिया में फैल रही है। तुरंत ही, जय जगत पदयात्रा की अंतरराष्ट्रीय समिति की आपात बैठक 15 मार्च को येरेवान में हुई, जिसमें निर्णय लिया गया कि जय जगत पदयात्रा को कुछ समय के लिए निलंबित किया जाए। परिस्थितियां बदलने पर पदयात्रा की समीक्षा के बाद आगे का निर्णय लिया जाएगा। फिर मैं और जिल बहन ने सभी 50 पदयात्रियों को उनके देश वापस भेजना शुरू किये। पदयात्री 16 मार्च को आर्मीनिया से अपने देश के लिए रवाना हुए और 19 मार्च 2020 को वे अपने-अपने देश पहुँच चुके थे। सभी पदयात्रियों को विदा करने के बाद जब हम लोग वापसी के लिए निकलने ही वाले थे तब तक हवाई मार्ग बंद हो गए और हम दोनों को आर्मीनिया में रूकना पड़ा।

मैं तथा जिल बहन कोरोना की वैश्विक महामारी से संघर्ष कर रहे दुनिया भर के साथियों सहित भारत में अपने साथियों के साथ नियमित सम्पर्क में हैं। मुझे मालूम है कि एकता परिषद और साथी संगठन पूरी निष्ठा और लगन के साथ कोरोना वायरस के कारण लाकडाउन की स्थिति में समुदाय के साथ राहत कार्य में सघन रूप से काम कर रहे हैं।

मैं उन सभी साथियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं जो इस विषम स्थिति में वंचित समुदाय की मदद के लिए दिन-रात परिश्रम कर रहे हैं। मुझे मालूम है एक साथ कई प्रकार की चुनौतियां लोगों के सामने हैं। खेती-किसानी के इस समय खेतीहर मजदूर जो पलायन कर दूसरे राज्यों में गये थे, वहीं फंस गये अथवा उनको सैकड़ो किलोमीटर पदयात्रा करके वापस अपने गांव आना पडा

है। कुछ अभी वहीं पर फंसे हुए है और उनके सामने कई प्रकार की चुनौतियां भी हैं। वहां से बाहर निकलने का कोई साधन नहीं है और न हीं उनके पास भोजन पकाने के लिए सामग्री। इन परिस्थितियों में उनको भोजन और अन्य जरूरतों को उपलब्ध कराना बड़ी चुनौती है। इस काम में एकता परिषद के साथी अन्य संस्था, संगठनों तथा संवेदनशील लोगों और सरकार के साथ मिलकर प्रयार कर रहे हैं कि बाहर फंसे हुए लोगों को मदद की जा सके। संकट की इस घडी में हम अपनी सेवाएं अलग–अलग तरीके से प्रदान कर सकते हैं,

इस संदर्भ में मेरा आपसे आग्रह है कि –

1. यदि आपके गांव या क्षेत्र से कोई व्यक्ति अथवा परिवार जो मजदूरी के लिए पलायन पर गये थे और किसी कारणवश वहां पर फंस गये है तो उनका मोबाइल नम्बर लेकर सम्पर्क करें और संगठन के साथियों को सूचना दे ताकि उनको मदद करने का प्रयास किया जा सके,
2. आपके गांव में यदि बाहर से कोई भी व्यक्ति/रिश्तेदार आता है तो इसकी सूचना स्थानीय जनप्रतिनिधि, ग्राम कमेटी अथवा सरंपच को देंवे ताकि उसकी मेडिकल जांच हो सके,
3. अपने आस–पास पडोस तथा गांव में यह सुनिश्चित करें कि सभी परिवारों के पास भोजन उपलब्ध हो। यदि किसी परिवार या व्यक्ति को भोजन में दिक्कत हो तो सरकार के द्वारा कोरोना के लिए गठित टास्क फोर्स या पंचायत या स्थानीय अधिकारियों के साथ सम्पर्क कर उनके लिए भोजन उपलब्ध करावें,
4. सरकार के द्वारा कोरोना को लेकर बहुत सारी योजनाओं में लोगों को आर्थिक मदद करने की बात कही गयी है। इनके बारे में लोगों को जागरूक करें तथा उनको बैंक से पैसे निकालने में मदद करें,
5. लाकडाउन के दौरान सभी की आजीविका प्रभावित हो रही है इसके कारण भविष्य में कई चुनौतियां पैदा होंगी। स्थानीय स्तर पर लोगों को लाकडाउन के बाद रोजगार उपलब्ध कराने में मनरेगा महत्वपूर्ण साबित होगा, इसलिए इसकी अभी से तैयारी करें जिससे लोगों को मनरेगा में मजदूरी मिल सके,
6. यदि आपके गांव में कोई अस्वस्थ है या किसी की तबीयत खराब है तो उसके लिए मेडिकल विभाग के साथ मिलकर उनको तत्काल उपचार उपलब्ध कराने में मदद करें।

मुझे उम्मीद है कि एकता परिषद के सभी साथी इस आपदा की घड़ी में एकजुट होकर प्रत्येक वंचित समुदाय को कोरोना के इस संकट से उबारने का प्रयास करेंगें।

शुभकामनाओं के साथ।

पीवी राजगोपाल
अर्मीनिया

दिनांक – 11/04/2020

लोकडाउन का फायदा उठाकर भागा ठेकेदार गांधी आश्रम ने की मदद

बंधाली के मजदूरों को अजमेर में छोड़ भागा ठेकेदार, एमजीएसए ने की मदद

श्योपुर। (नईदुनिया प्रतिनिधि)। मानवता को तार-तार कर देने वाली घटना राजस्थान के अजमेर जिले से आई है यहां पर बंधाली गांव के 32 मजदूरों को ठेकेदार, सड़क पर छोड़कर भाग गया। भूख प्यास से विचलित इन मजदूरों को (एमजीएस)गांधी सेवा आश्रम के माध्यम से वहां के प्रशासन ने खाने-पीने और रहने की व्यवस्था की।

देशभर में फंसे गरीब मजदूरों को आसरा दिलाने के उद्देश्य महात्मा गांधी सेवा आश्रम ने कोरोना से जंग में हम सब संग में शीर्षक से व्हाट्सएप ग्रुप बनाया है। इस ग्रुप के माध्यम से देशभर में गांधी सेवा आश्रम से जुड़े कार्यकर्ता सड़कों पर लावारिस बेसहारा मजदूरों को सहारा मुहैया कराने काम कर रहे हैं। इसी ग्रुप पर जानकारी मिली की बंधाली गांव के 32 मजदूर राजस्थान के अजमेर जिले के नसीराबाद तहसील के गांव रामसर में मथुरा रिफाइनरी तक गैस पाइपलाइन में खुदाई का काम करने के लिए गए थे। लॉकडाउन होते ही ठेकेदार इन मजदूरों को छोड़कर भाग निकला। भूख प्यास से व्याकुल यह मजदूर गांव की सड़क के किनारे मदद की आस में बैठ गए। महात्मा गांधी सेवा आश्रम के प्रबंधक जयसिंह जादौन ने अजमेर दरगाह के खादिम विक्रम सिंह से चर्चा कर मजदूरों को आसरा दिलाने की गुहार लगाई। विक्रम सिंह ने उन्हें एसडीएम कंट्रोल रूम का नंबर दिया जिसके माध्यम से सभी मजदूरों को लॉकडाउन के दौरान गांव के स्कूल में रहने की व्यवस्था स्थानीय प्रशासन ने कराई और तहसीलदार ने मौके पर पहुंचकर तत्काल 10 किलो आटा भोजन सामग्री उपलब्ध कराई। महात्मा गांधी सेवा आश्रम के प्रबंधक जयसिंह जादौन ने बताया कि फूलदा, लाटीपुरा, बलावनी, बावड़ीचापा, आमेठ,मयापुर आदि गांवों के मजदूर इसी तरह फंसे है, निजी मदद की गुहार केन्द्र व राज्य सरकारों से लगाई है।

अजमेर के पास फंसा बंधाली गांव के मजदूर का परिवार। ● नईदुनिया

श्योपुर । मानवता को तार-तार कर देने वाली घटना राजस्थान के अजमेर जिले से आई है यहां पर बंधाली गांव के 32 मजदूरों को ठेकेदार, सड़क पर छोड़कर भाग गया। भूख प्यास से विचलित इन मजदूरों को गांधी सेवा आश्रम के माध्यम से वहां के प्रशासन ने खाने-पीने और रहने की व्यवस्था की।

जैसा कि विदित है कि देशभर में फंसे गरीब मजदूरों को आसरा दिलाने के उद्देश्य से एकता परिषद ने EP Corona Response` व्हाट्सएप ग्रुप बनाया है। इस ग्रुप के माध्यम से देशभर में एकता परिषद संगठन और स्वयं सेवी संस्थाओं से जुड़े कार्यकर्ता सड़कों पर लावारिस बेसहारा मजदूरों को सहारा मुहैया कराने का काम कर रहे हैं। इसी ग्रुप पर जानकारी मिली की बंधाली गांव के 32 मजदूर राजस्थान के अजमेर जिले के नसीराबाद तहसील के गांव रामसर में मथुरा रिफाइनरी तक गैस पाइपलाइन में खुदाई का काम करने के लिए गए थे। लोकडाउन होते ही ठेकेदार इन मजदूरों को छोड़कर भाग निकला। भूख प्यास से व्याकुल यह मजदूर गांव की सड़क के किनारे मदद की आस में बैठ गए। महात्मा गांधी सेवा आश्रम के प्रबंधक जयसिंह जादौन ने अजमेर दरगाह के खादिम विक्रम सिंह से चर्चा कर मजदूरों को आसरा दिलाने की गुहार लगाई। विक्रम सिंह ने उन्हें एसडीएम कंट्रोल रूम का नंबर दिया जिसके माध्यम से सभी मजदूरों को लोकडाउन के दौरान गांव के स्कूल में रहने की व्यवस्था स्थानीय प्रशासन से कराई और तहसीलदार ने मौके पर पहुंचकर तत्काल 10 किलो आटा भोजन सामग्री उपलब्ध कराई। जयसिंह जादौन ने बताया कि फूलदा, लाटीपुरा, बलावनी, बावड़ीचापा, आमेठ,मयापुर आदि गांवों के मजदूर इसी तरह फंसे है, निजी मदद की गुहार केन्द्र व राज्य सरकारों से लगाई है।

राजस्थान के अजमेर में फंसे कराहल के बंधाली गांव के 32 लोग, मांगी मदद

मजदूरी करने गए थे, अब फंसकर रह गए तो सड़क किनारे तंबू लगाकर कर रहे गुजर-बसर

भास्कर संवाददाता | श्योपुर

राजस्थान में मजदूरी करने के लिए गए बंधाली गांव के कुछ परिवार लॉक डाउन के बीच वहीं फंसकर रह गए, जिन्होंने वापस आने के लिए मदद मांगी। इनके फोटो भी वाट्सएप ग्रुपों पर लगातार वायरल किए जा रहे है, जहां सड़क किनारे यह लोग तंबू गाड़कर रह रहे हैं।

राजस्थान के जयपुर सहित अन्य इलाकों में मजदूरी के लिए गए बंधारी गांव के 18 महिला-पुरुष, जिनमें 14 बच्चे भी शामिल है। सीमाएं सील होने के चलते राजस्थान के अजमेर जिले में फंसकर रह गए है। यह लोग जिले की सीमा के पास ही तंबू लगाकर गुजर बसर कर रहे है। यहां इन्हें मौके पर राजस्थान प्रशासन की ओर से आटा व चावल दिए गए है, जिन्हें खाकर यह अपना पालन-पोषण कर रहे है। लेकिन अब उक्त परिवारों ने अपने फोटो भेजकर मदद मांगी है कि अब उनके पास खाने को नहीं है और वह परेशान है। इसलिए किसी भी तरह से उन्हें वापस गांव लाने में मदद की जाए।

अजमेर में फंसे आदिवासी मजदूर, जिन्होंने लगाई प्रशासन से मदद की गुहार।

एकता परिषद की पैरवी के बाद मिला २३ आदिवासी परिवारों को राशन।

विजयपुर – विजयपुर जनपद की बैचाई ग्राम पंचायत का धमानी गॉव जो कि जंगली इलाके में हैं, यहा 23 आदिवासी परिवार हनवसरत हैं जिनके पास बीपीएल राशन कार्ड नही है और न हि पात्रता पर्ची। इसलिये इन्हे पीडीएस की दुकान से राशन नही मिला। परिणाम स्वरुप यह 23 आदिवासी परिवार भूखे मरने के कगार पर पहुॅच गये क्यों कि जंगल में इन गॉव तक किसी भी दानदाता या स्वेच्छिक संगठनों की नजर भी नही पड़ रही थी।

एकता परिषद के संभागीय समन्वयक रामदत्त सिंह तोमर को जानकारी मिलने पर लोकडाउन के बाबजूद धमानी गॉव पहुॅचकर स्थिति का जायजा लिया और कलेक्टर श्योपुर से ग्रामीणों की बात मोबाइल पर कराकर स्वंय ने पहिले सारी परेशानियों से अवगत कराया और लिखित में आवेदन कलेक्टर साहब को भिजवाया।

मेहनत रंग लाई और कलेक्टर महोदया प्रतिभा पाल जी ने SDM विजयपुर को ग्राम धमानी में राशन वितरण कराने के कड़े निर्देश दिये। जिसके पालन में आज SDM श्री

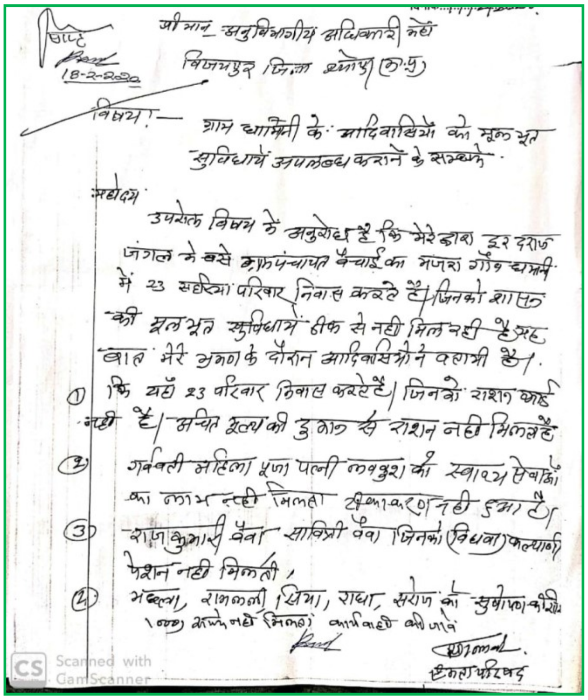

प्रति
श्रीमान अनुविभागीय अधिकारी महो.
विजयपुर जिला श्योपुर (म.प्र.)
18-2-2020

विषय:— ग्राम धामनी के आदिवासियों को मूलभूत सुविधायें उपलब्ध कराने के सम्बन्ध

महोदय
उपरोक्त विषय के अनुरोध है कि मेरे द्वारा दूर दराज जंगल के बसे ग्रामपंचायत बैचाई का मजरा गॉव धामनी में 23 सहरिया परिवार निवास करते हैं जिनको शासन की मूलभूत सुविधायें ठीक से नही मिल रही है यह बात मेरे भ्रमण के दौरान आदिवासियों ने बताई है।

(1) कि यहाँ 23 परिवार निवास करते हैं जिनके राशन कार्ड नही है उचित मूल्य की दुकान से राशन नही मिलता है

(2) गर्भवती महिला पूजा पत्नी लवकुश को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ नही मिलता टीकाकरण नही हुआ है।

(3) राजकुमारी बैवा सावित्री बैवा जिनको (विधवा) कल्याणी पेंशन नही मिलती।

(4) भल्ला, रामकली, सिया, राधा, सरोज को सुपोषण की राशि 1000 अभी नही मिल रही कार्यवाही की जावे

एकता परिषद

त्रिलोचन गॉड द्वारा फूड इस्पेक्टर विजयपुर को धमानी गांव भेजकर के 23 परिवारों को 10 किग्रा आटा , 500 ग्राम दाल , 1 लीटर तेल , 1किग्रा नमक और 5 किग्रा चावल प्रति परिवार राशन वितरण.ा कराया। जिससे की .जंलल मे बसे परिवारो को एकता परिषद से उम्मीद की लहर दिखी।

प्रशाशन के साथ जन पैरवी कर शोशल डिस्टेसिंग में दिलाया राशन

जिला ग्वालियर का घाटीगांव ब्लॉक आदिवासी ब्लॉक है, अनुसूचित जन जाति विभाग की कई योजनाओं का यहां क्रियान्वयन होता है। लोकडाउन के बाद 161 आदिवासी परिवार अपने गाव पाटन लोटकर आ गये। प्रशाशन ने इन परिवारों को 3-3 माह का राशन अग्रिम रुप से देने का निर्देश पंचायत सचिव को दिया और 3 माह का स्टाक भी पीडीएस की दुकान में पहुँचा दिया गया। 3 से 4 दिन गुजरने के बाद भी सचिव ने राशन वितरण नही किया। गॉव के सदस्यों ने कई बार सचिव से अनुरोध किया कि हमारे पास खाने के लिये अनाज नही है लेकिन वह अधिक भीड़ आने की आशंका और 'शोशलडिस्टेसिंग न होने की 'शंका जाहिर कर अनाज वितरण के लिये तैयार नही हुआ।

एकता परिषद के कार्यकर्ता कुबेर भाई ने घाटीगांव तहसीलदार को की और सभी बातों से उन्हे अनुभव कराया। तहसीलदार साहब ने तुरंत सचिव को फोन पर फटकारते हुये कहा कि उन्हे राशन का वितरण चालू किया जाय ये सभी ऐकता परिषद संगठन के लोग हैं 'शोशल डिस्टेंसिग का पालन करेगे।

इसके बाद सभी 161 परिवारों को 3 माह का राशन 'शोशल डिस्टेसिंग में दिया गया। जिसकी सभी ने तारीफ की।

५०० खादी मास्क तैयार कर प्रशाशन को दिये गये।

मुरैना – महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा के सहयोग से जौरा एसडीएम श्री नीरज 'शर्मा जी को खादी के 500 मास्क तैयार करा कर दिये गये ।इन मास्क का उपयोग गरीब जरुरत मंद लोगों को वितरण के लिये किया जायेगा।

स्थानीय मदद लेकर पहुँचे भीमकोठी, तब जले लकड़ी बीनने वाले परिवारों के चूल्हे

जिला सीहोर – राजधानी भोपाल के समीप बसा सीहोर जिला आदिवासी बाहुल्य जिला है। बुधनी ब्लॉक के भीमकोठी गॉव में लोक डाउन के बाद आये संकट में वनांचल में रहने वाले आदिवासी, जो कि जंगल से सुखी लकड़ी लाकर सड़क के किनारे लाकर बेचने का कार्य करते रहे हैं वही उनकी आजीविका है राशन के लिये मोहताज हो गये थे। उनके पास राशन ही नही था जिसको पकाने के लिये वह चुल्हा जलाते। क्यों कि रोजाना कमाना और उतना ही राशन लाकर खा लेना उनकी आदत में रहा। कभी जोड़कर नही रखा।

एकता परिशद जिला सीहोर के जिला समन्वयक राकेश रतन की जानकारी में जब भीमकोठी के 30 आदिवासी परिवारो की समस्या सामने आई उसने तुरेत स्थानीय लोगों के साथ तुरेत सम्पर्क कर सहयोग के लिये अनुरोध किया। आनन भानन में 2 क्वंटल आटा 1 क्वंटल आलू, 50 किग्रा नमक, 40 लीटर सरसों तेल की बोतल, 50 किग्रा चीनी, और 50 पत्ती के पेकेट संकलित कर एकता परिशद टीम के साथ अपने कमरे पर तैयार कर भीमकोठी गॉव पहॅचकर सभी 30 परिवारों को एक एक पेकिट वितरित किया जिसके बाद सभी परिवारों में चुल्हा जल सका और उन्होने एकता परिशद के साथियों को धन्यवाद कहा।

राकेश रतन स्वयं भीमकोठी गॉव के सरपंच से मिले और उन्हे आदिवासी परिवारों साथ साथ पास ही रेलवे मे मजदूरी कर रहे रीवा, बिहार और यू पी के 42 मजदूरो को राशन देने की बात कही और स्थानीय प्रशाशन तक मोबाइल से अनुरोध किया जिसका परिणाम यह रहा कि 2 दिन बाद आदिवासी परिवारों को और बाहर के मजदूरों को पंचायत द्वारा 15 –15 किलो गेंहू और 5 किलो चावल की व्यवस्था की गयी है।

घर घर जाकर राशन सामग्री और मास्क दिये

गुना – एकता परिषद कार्यकर्ताओं द्वारा 74 आदिवासी परिवारों को घर घर जाकर राशन सामग्री पेकेट और मास्क वितरण किये गये।

कोरोन्टीन में रुके परिवारों के देख रेख में जुटी एकता परिषद कटनी

घुमंतु जाति की देख-रेख में जुटी मानव जीवन विकास समिति

कटनी, देशबन्धु। मानव जीवन विकास समिति, एकता परिषद द्वारा 8 अप्रैल 2020 को मझगवां को बिहार (पटना) से 8 परिवार के 40 लोग लॉकडाउन के कारण कोरेनटाईन मे रुके हुये है। प्रति परिवार को 25 किलो आटा व 5 किलो चावल के हिसाब से 2 क्विंटल आटा और 40 किलो चावल का वितरण किया गया। ये परिवार घुमंतु जाति के है जो रोजीरोटी के चक्कर मे गांव गांव घूमकर अपना जीवन यापन कर रहे है। ये परिवार को समिति लगातार निगरानी मे रखकर मदद कर रही है। मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह के मार्गदर्शन मे समिति कार्यकर्ता दयाशंकर यादव, अभय कुमार, रामकिशोर, ज्ञानप्रकाश उपाध्याय, रवि पाण्डेय की इस काम महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

कटनी – मानव जीवन विकास समिति एवं एकता परिषद द्वारा मझगवां में बिहार (पटना) से 8 परिवार के 40 लोग लोकडाउन के कारण कोरेनटाईन मे रुके हुये है। प्रति परिवार को 25 किलो आटा व 5 किलो चावल के हिसाब से 2 क्विंटल आटा और 40 किलो चावल का वितरण किया गया। ये परिवार घुमंतु जाति के है जो रोजीरोटी के चक्कर मे गांव गांव घूमकर अपना जीवन यापन कर रहे है। ये परिवार को समिति लगातार निगरानी मे रखकर मदद कर रही है।

ओझा आदिवासी समाज और बसोर समुदाय को अनाज देकर की मदद

जबलपुर – नवरचना संस्था मोहला एंव एकता परिशद टीम ने जिला सिवनी के पाठा गॉव धूमा, ब्लॉक लखनोदा में निवासरत जरुरतमंद ओझा आदिवासी समुदाय औरबसोर समुदाय के 25 परिवारों को 10 – 10 किग्रा अनाज एंव भोजन सामग्री देकर मदद की गई। यह सामग्री स्थानीय स्तर पर संग्रहित कर पेकेट बनाकर दी गई। ग्राम पंचायत डुगरिया में में निःशुल्क मास्क का वितरण कर ‘शोशल डिस्टेशिंग की जानकारी भी प्रदान की गई।

५००० मास्क वितरण कर दी गई शोशल डिस्टेंशिग की जानकारी

धार – महात्मा गांधी सेवा आश्रम धार कार्यालय पर स्टाफ के साथी मास्क तैयार कर आगनवाड़ी कार्यकर्ता, स्वास्थ्य कार्यकर्ता एंव गरीब मजदूर परिवारों को निःशुल्क वितरण कर रहे है । प्रतिदिन टीम बनाकर कुक्षी, मनावर और धार के गरीब श्रमिक क्षैत्र में जाकर मास्क का प्रयोग करना शोशल डिस्टेशिंग की जानकारी लोगों को देने का कार्य कर रहे हैं। अभी तक 5000 मास्क का वितरण किया गया है।

संगठन के गांव में स्कूल बच्चों को दिलाये ५–५ किलो गेहूॅ।

रायसेन – एकता परिशद संगठन गॉव बिनेका जो कि पूरी तरह है आदिवासी मंजरा है और जंगल मैं बसा हुआ है। वहॉ के बच्चों को स्कूल हेडमास्टर से एकता परिशद समन्वयक सरस्वती ने बात कर मध्यान भोजन के 5–5 किलो गेहूॅ का वितरण कराया और किचन गार्डन से ताजा सब्जी लाकर वितरण की।

सुजात भाई ने मुस्लिम युवाओं के सहयोग से जरुरतमंद लोगों को बाटी हरी सब्जिया

हिंडोरिया – नगर के नौजवान मुस्लिम युवाओं ने कोरोना महामारी के चलते लागू लॉक डाउन से प्रभावित जरूरतमंद लोगों के घर घर जाकर हरी सब्जी का वितरण किया ! यह वितरण नगर के वार्ड नंबर 6 – 7 एवं 9 में किया गया! इस मौके पर एकता परिषद के राज्य समन्वयक सुजात खान, मुबारक राजा नूरी, शफीक खान, मोर्टन खान, दानिश खान, जाफिर खान इत्यादि मौजूद रहे!

कम्पनी के लोगो से बात कर की भोजन की व्यवस्था

झाबुआ – जिले के गांव चलानी, उटवा और गुराड़िया के 31 मजदूर गुजरात में कम्पनी में फस गये । उनका ठेकेदार भाग गया। एकता परिशद समन्वयक दुर्गा ने कम्पनी में फोन कर वहां के अधिकारियों को अवगत कराया जिससे उन्हे दोनो समय का भोजन कम्पनी की मेस से मिल रहा है।

बेसहारा महिला का सहारा बनी एकता परिषद

विकलांग निराश्रित को नहीं मिलता शासकीय योजना का लाभ

शाहबाद बारां.... कोरोना महामारी के इस दौर में सब दूर लोकडाउन के चलते घरों में बंद हैं सरकार सभी को आवश्यक सामग्री घरों पर ही उपलब्ध कराने का विश्वास दिला रही है पर क्या उनकी निगाह उस हर व्यक्ति तक पहुंच रही है जिसे पैसा न सही राशन की तो आवश्यकता है ही ऐसे तालाबंदी के डर मे उन्हें ऐसे लोगों की जानकारी दे तो दे कौन। ऐसी तपन मे शीतल हवा के झोंके के रुप मे कुछ लोग हैं जो अपनी जान जोखिम में डालकर ऐसे जरूरत मंदों की मदद मे जुटे हैं। एकता परिषद के कार्यकर्ता अग्रणी हैं जिन्हें जब भी कोई ऐसी जानकारी मिलती है तो वे सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से इस संगठन के जिम्मेदार लोगों तक ये बात पहुंचाते हैं जो तत्काल मदद पहुंचाने की व्यवस्था करते हैं

ऐसी ही एक कहानी है राजस्थान के बारां जिले की तहसील शाहबाद की ग्रामपंचायत सनबाडा के ग्राम पठारी की जहां एक 55 बर्षीय महिला लासोबाई एक झोपड़ी मे निवास करती है जो पूरी तरह से निराश्रित है उसके पति कंचन सहरिया की 1 वर्ष पूर्व मृत्यु हो गई है उसके कोई पुत्र पुत्री भी नहीं है प्रकृति ने भी उसके साथ अन्याय किया है वह दोनों पैरों से विकलांग है ऐसे मे सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की सबसे अधिक पात्र है तो यह महिला पर आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस महिला को न तो निराश्रित पेंशन मिलती है न ही उसे उचित मूल्य का राशन प्राप्त हो रहा है यदि आम तौर पर यह आरोप लगाया जाता है कि सरकार की योजनाओं का सही क्रियान्वयन नहीं होता तो इसका सबसे बड़ा उदाहरण लासोबाई है जो सामाजिक सुरक्षा पेंशन, पीडीएस का राशन पाने की पात्र होने के बाबजूद 1 वर्ष से उसका पालन पोषण अडोसी पडोसी कर रहे हैं जबकि ग्राम की सरकार कही जाने वाली ग्राम पंचायत भी यहां से दूर नहीं है और ऐसा भी नहीं है कि उन्हें इस महिला की स्थिति का पता न हो और नहीं है तो जनप्रतिनिधियों की इससे बडी गैर जिम्मेदारी क्या होगी

जो भी स्थिति हो पर यहां के एकता परिषद से जुड़े कुछ साथियों ने इस बात की जानकारी महातमा गांधी सेवा आश्रम श्योपुर के प्रबंधक जयसिंह जादौन को दी उन्होंने तत्काल वहां के एक साथी कम्मोदी लाल से संपर्क कर तत्काल उस महिला को राशन पहुंचाने को कहा जिन्होंने बिना बिलंब किये 5 किलो आटा, 1 किलो तेल, 1 किलो दाल व मिर्च मसाला नमक लासोबाई तक पहुंचाया जिससे उसके चेहरे पर सुकून नजर आया न सिर्फ राशन बल्कि उस अम्मा को बनाकर खिलाने की भी जुम्मेदारी स्थानीय मुखिया बच्चूलाल को दी है और उन्होंने इस जिम्मेदारी को निभाने का वादा भी किया है

3. उत्तर प्रदेश

व्यापारियो से मदद लेकर ८६ परिवारों तक पहॅचाई राहत सामग्री

उत्तर प्रदेश के जिला झांसी ब्लाक बबीना ग्राम नया खेड़ा, रिचारिया,नई बस्ती और बड़ोरा मैं कोरोनावायरस लोकडाउन के चलते पूरे गांव में भुखमरी की हालत हो चुकी है यह सभी गांव आदिवासी परिवारों के हो जो कि मुख्य सड़क से 50 – 55 किलो मीटर की दूरी पर सुदुर जंगल में रहते हैं। गांव की गरीब दलित आदिवासी भूख से लड़ रहे हैं। प्रशाशन से अभी किसी भी प्रकार की मदद नही मिली है ऐसी स्थिति में एकता परिषद की मेबा बहिन और सियाराम भाई ने बबीना ब्लाक के कुछ व्यापारियां, दानदाताओं से संपर्क कर 3 तारीख को 86 लागों को राशन के पेकेट के वितरण कराया गया जिसमें 5 किलो आटा, नमक, तेल, आधा किलो दाल, एवं कुछ हरी सब्जियां उपलब्ध कराई गई। इसके अलावा 15 अति गरीब वृद्ध महिलाओं को एक एक हजार रुपये नगद भी दिलाये गये।

---

4. बिहार

प्रगति ग्रामीण विकास समिति और एकता परिशद बिहार १२ जिलों में कई स्तरो पर कर रही हैः–

- खाद्ध सुरक्षा नियमित सामग्री सुनिश्चित कराना।
- गरीबों के बीच मास्क वितरण।
- शुद्ध पेयजल ओर व्यथ्कतगत स्वच्छता।
- घर में रहना।
- प्रवासी मजदूरो की पहिचान।

पटना :– इस जिले के दानापुर, बिहटा, पालीगंज में 360 परिवार जिनके पास राशन कार्ड नही था स्थानीय सहयोग से चावल दाल दिलाया गया है।

भोजपुर :– जिले के संदेश, सहार, अविगांव, गढानी और चरपोखरी में 40 इन्टरनेट साथियों की की मदद से 840 परिवारों को कोरोना वायरस संक्रमण से बचने के उपाय बताये गये और प्रशाशन से राशन दिलाया गया है।

अरवल :– 120 परिवारों को मोबाइल से जागरुकता का कार्य किया और 35 परिवारों को राशन दिलाया गया।

बांका :- 60 इन्टरनेट साथियों द्वारा मोबाइल से 1800 महिलाओं एवं लड़कियो को कोराना से बचाव के तरीके बताये गये।

मधेपुरा :- 130 परिवार जिनके पास राशन कार्ड नही थे उनकी सूची राशन के लिये प्रखंड को दी गई है।

मुजफ्फरपुर :- 30 गॉव में करोना संक्रमण से बचाव के लिये जागरुकता का कार्य चल रहा है।

गया - बिहार एकता परिशद की टीम युवा शिविर में प्रशिक्षित गाँव के मुखिया साथी तथा युवा-युवतियों द्वारा साफ-सफाई, हाथ धुलाई तथा घर में रहकर समुदाय को शोशल डिसटेंशिग जागरूकता का कार्य कर रहे है।अति गरीब को परिवारों को एकता परिशद अनाज कोष एवं ग्राम कोष से मदद किया जा रहा है अभी तक 53 परिवारों को 10 - 10 किग्रा गेहॅू और 5 - 5 किलो चावल ओर कुछ कुछ नगदी पैसा दिया गया है।

सभी एकता परिशद के सभी समन्वयक जिलापंचायत जनप्रतिनिधियों यथा वार्ड सदस्य, पंच एवं आंगनबाड़ी सेविका से सम्पर्क में हैं उन्हे सहयोग कर रहे हैं।

जहानाबाद, गया, नवादा एवं जमुई जिले में अपने गाँव से जो जानकारी प्राप्त हुई है कि 3958 लोग पलायन किये हैं जिनमें 308 लोग लौटे हैं। सबका जांच प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में किया गया एवं मुहर लगा कर भेज दिया गया।

5. छत्तीसगढ़

शासन ने दिया राशन तो जन-प्रतिनिधि ने दिया हरी सब्जी

ग्राम गोडलबाय, पंचायत डूमर बाहरा, जिला गरियाबंद, छत्तीसगढ़

गोडलबाय एक आदिवासी बाहुल्य गाँव है जो गरियाबंद जिले के अंतर्गत घने जंगलों के मध्य बसा हुवा है. इस गाँव में आदिवासी समुदाय के 350 परिवार रहते है, जिनका जीवन यापन का साधन छोटे स्तर पर खेती के साथ साथ मजदूरी से होता है . इस क्षेत्र में इस मौसम में समय-समय पर बारिश होने के कारन धान की फसल, कुछ दलहन की फसल के साथ-साथ सब्जी की थोड़ी-बहुत सब्जी जो उनके किचन गार्डन में थे वह भी नष्ट हो गया है .

माह मार्च तथा अप्रेल इन समुदायों के लिया दूभर हो गया है क्योंकि ये सभी परिवार मजदूरी करके अपना जीवन यापन करते हैं

लेकिन कोरोना जैसे महामारी के प्रकोप के कारण पुरे देश के साथ साथ छत्तीसगढ़ राज्य भी सवबाकवूद के चलते पूरी तरह बंद हो गया है, जिससे रोजी–रोटी के लिए बहुत ही स्थिति का सामना करना पड़ रहा है. मजदूरी का काम बंद होने से समुदाय के पास नगदी की भी विकट स्थिति आ गयी है .कोरोना महामारी के चलते सवबाकवूद होने से छत्तीसगढ़ शासन द्वारा 2 माह (अप्रेल और मई 2020) का राशन देने के लिए घोषणा किया है और 1 अप्रेल से चवै के माध्यम से बंटना शुरू हो गया है . लेकिन फिर भी हरी सब्जी के लिए नगदी का अभाव सामने आने लगा.

इस स्थिति को देखते हुए एकता परिषद् के गरियाबंद जिले के जिले समन्वयक नुरानी बहन द्वारा जन–प्रतिनिधियों से बात किया गया. गरियाबंद जिले के जिला पंचायत सभापति श्री फिरतु राम कँवर द्वारा सब्जी मंडी के व्यापारियों से हरी सब्जी बांटकर इस विषम समस्या की स्थिति में सहयोग करने की अपील किया गया, जिससे मंडी व्यापारियों द्वारा इस गाँव के 350 परिवारों को हरी सब्जी, आलू, प्याज, भाटा, हरी मिर्ची आदि का पर्याप्त मात्रा में सहयोग देकर अपना योगदान दिया है .

इसी प्रकार जिला कोरबा में कार्यकर्ता बृजलाल ने 60 पांडो परिवार को जनप्रतिनिधि के सहशेग से 5 किगा चावल, 2 किलो आलू, तेल ,नमक के पेकेट दिलाकर मदद की।

वाल पेटिंग कर और हाथ धुलाकर बता रहे कोरोना संक्रमण से बचने के उपाय

जिला सूरजपुर, गांव बद्रीका आश्रम में को रोना संक्रमण से बचाने हेतु जन जंगरुकता अभियान एकता परिशद कार्यकर्ताओं द्वारा चलाया जा रहा है। दीवार पर स्लोगन लिखने और बच्चों एवं महिलाओं को साबुन से हाथ धोने के हाथ धुलाई के 7 तरीकों को बताया जा रहा है। इसके साथ साथ एक दूसरे से दूरी रखने की भी जानकारी दी जा रही है।

6. उडीसा

जरुरत मंद लोगो की पहिचान कर जारी है राहत कार्य अभियान

उड़ीसा – टांगी ब्लॉक, बेरबेरा और बानपुर खोंदा में एकता परिशद टीम में पीडीएस दुकानों से सभी राशन कार्ड धारियों के लिये 3 – 3 माह का राशन शोशल डिस्टेसिंग में दिलाने में मदद की । 300 से अधिक परिवारों को राशन दिलाया गया। कालाहांडी एकता परिशद टीम द्वारा भवानीपटटनम अर्बन की 20 स्लम बस्तियों में 459 अति गरीब जरुरत मंद परिवार और 167 रैक पेकर्स परिवारों को चिन्हित कर प्रशासन की मदद से दानो समय का भोजन प्रतिदिन पहॅचाने का काम कर रहे हैं। 4 स्लम में 130 लोगों के पास राशन कार्ड नही था उन परिवारों को 10 किग्रा चावल, 2 किग्रा दाल और 1000 रुपये दिलाये गये हैं। इसके अलावा फल और सब्जी देने कवतरण करने का कार्य स्थानीय सहयोग से दिया जा रहा है। एकता परियाद संगठन के सभी 50 गॉव में स्थानीय 57 युवा युवितियों से सम्पर्क कर गॉव में कोरोना के संक्रमण से बचने के उपाय और ‘शोशल डिस्टेसिंग की जानकारी प्रदान कर रहे है। वह स्थानीय प्रशाशन को भी सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

7. केरला

वंचितों , मजदूरों और जरुरत मंद लोगों के लिये जारी है राहत अभियान

केरल – एकता परिशद केरला द्वारा कोरोना वायरस लोक डाडन में प्रारम्भ किया राहत अभियान अनवरत जारी है। दूरदराज के इलाको में फसे मजदूरों , रैक पेकर्स, और जरुरत मंद परिवारों की जरुरतों को देखते हुये चावल, दाल, नमक, चीनी, तेल और साबुन का वितण किया जा रहा है। एकता परिशद साथी वहां के स्थानीय प्रशाशन और दान दाताओं के सम्पर्क में रहकर उन्हे सहयोग भी कर रहे हैं।

---

8. तमिलनाडु

अनाईमलाई टाइगर्स अभ्यारण्य में बसे 300 आदिवासी परिवारों तक पहुँची राहत सामग्री

तमिलनाडु – एकता परिशद तमिलनाडु टीम उन जन जाति परिवारों को मदद कर रही है जो कि अनाईमलाई टाइगर्स अभ्यारण्य में बसे हैं। टीम ने उदुमलपेट राजस्व मंडल से विशेश अनुमति लेकर प्रतिबंधित क्षैत्र में राहत सामग्री के पेकेट वितरित किये। कुझीपटटी के गावों में भी पहॅचकर आधी रात तक 300 आदिवासी परिवारों तक राहत सामग्री पहॅचाई।

9. आसाम

जन प्रतिनिधियों का सहयोग लेकर जरुरत मंद लोगों तक पहॅचा रहे राशन सामग्री

असम – प्रदेश के ढेमाजी जिला के गोगामुख तहसील के अन्तर्गत बरडोलिनी ग्राम पंचायत के खना कृष्णपुर1–2,गोबरथाली के 1–2 ,बूढ़ाकुरी और सापेखाती गांवों के कुल 32 अत्यंत गरीब परिवारों में 10 किलो चावल, 2किलो दाल, 3 किलो आलू, 1ली सरसो तेल, 1किलो नमक और 2 पीस साबुन बरडोलनी ग्राम पंचायत अध्यक्ष श्री गोविंद सुतिया द्वारा वितरित किया गया! इस अवसर पर विधायक श्री रनुज पेगू, जिला परिषद अध्यक्ष मोहन गोगोई, वार्ड सदस्यों ने भरपूर सहयोग किया! इस क्षेत्र की एकता परिषद कार्यकर्ता नयन तारा ने 4 दिनों से उक्त पदाधिकारियों से टेलीफोनिक संपर्क करके जनता की आवाज को बुलंद किया और गरीब लोगों के मदद हेतु गुहार लगाई थी! रतनपुर गॉव में जिनके पास राशन कार्ड नही था उन 15 महिलाओं को एक एक हजार की राशि की मदद की गई है।

यही कारण है कि जन प्रतिनिधियों की सहभागिता सुनिश्चित हो सकी!

10. मणिपुर

- राहत सामग्री के पेकेट तैयार कर 50 परिवारों को वितण किया अया है।
- लागों को 'शोशल डिस्टेशिंग के पिये जान कारी दी जा रही है।
- एकता परिशद टीम के लोग स्थानीय प्रशाशन को सहयोग कर रहे हैं।
- बहुत गरीब जरुरत मंद लोगों को चिन्हित किया जा रहा है जिससे उन्हे मदद की जा सके।
- जिनके पास राशन कार्ड नही हैंउनकी सूची बनाकर स्थानीय प्रतिनिधियों से नगदी दिलाने का कार्य किया जा रहा है।

एकता परिषद संगठन गॉव में शोशलडिस्टेसिंग के २ उदाहरण

पहली तस्वीर तमिलनाडु के गॉव की और दूसरी तस्वीर ग्वालियर घाटीगांव के पाटन गॉव की है,जो इंगित करती है कि जिन आदिवासी अंचलों में एकता परिषद संगठन साथी सक्रिय है वहॉ से इस प्रकार की तस्वीरें आना कोरोना के खिलाफ संघर्ष में नीम का पत्थर साबित होगीं।

कोरोना संकट की विपरीत परिस्थितियों के बीच वंचितों की कहानी, उन्ही की जुबानी......................

मयापुर के लोग पहुचे पाकिस्तान बोर्डर पर – एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डाँ रनसिंह परमार जी ने का उनसे बात कहा चिंता न करे वहीं करोगें व्यवस्था।

आखिर कहा तक दौड़ता है इँसान पेट की आग बुझाने..........................

श्योपुर,महात्मा गांधी सेवा आश्रम द्बारा संचालित बालिका शिक्षा केंद्र के समन्वयक पुनीत शर्मा द्वारा कोरोना की जंग में हम सब संग में व्हाट्सएप ग्रुप पर यह सूचना डाली गई की मयापुर गांव जो कि श्योपुर से महज 15 किलामीटर दूर है वहां के 13 लोग जैसलमेर जिले में पाकिस्तान बोर्डर पर फंसे हुए हैं, इस सूचना पर एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डाँ रनसिंह परमार जी ने उनसे बात की और कहा कि चिंता न करे वहीं करायेगें व्यवस्था।

एकता परिशद टीम श्योपुर के प्रयास से पता चला कि हमारी ग्रामीण महिला मुखिया कांतिभाई भी वहां है

कांतिभाई से बात करने पर पता चला कि उस क्षेत्र में हजारों की संख्या में मध्य प्रदेश के आदिवासी लोग काम कर रहे हैं उस क्षेत्र में जीरा अब चना की फसल काटने के लिए जाते हैं। उन्होने सिमिरथा राम जी से बात कराई वह वहां के पूर्व सरपंच रहे हैं इन लोगो ने उनके भी खेत में फसल कटाई का काम किया था। सिमिरथारामजी से पता चला कि वे 36 एस एल वी चक जवाहर नगर पंचायत जो पंचायत भी है तहसील मोहनगढ़ जला जैसलमेर में हैं

सिमिरथाराम जी का नम्बर भी उनसे लिया और सबसे पहले मैंने उन्हें ही समझाया की ऐसे समय आप जैसे लोगो को ही मदद के लिये सामने आना चाहिये आप यहां के जनप्रतिनिधि हैं इस पर सिमिरथा राम जी ने 30 किलो आटा तत्काल देने की बात कहीं उन्हीं से मैंने वहां के अधिकारी और पंचायत सचिव पटवारी के नंबर लेने की कहा इस पर उन्होंने कहा कि अभी मेरे पास उपलब्ध नहीं है मैं तत्काल उपलब्ध कराता हूं

उसके बाद वहां की संस्था संगठन की तलाश जारी की गई जिसमें हम लोगों के साथ बहुत पहले काम करने वाले वहां के समाज सेवी संस्था श्योर की प्रतिनिधि लता बहन का नंबर मेरे पास था जो बाड़मेर में काम करती हैं उनको फोन लगाया और व्हाट्सएप मैसेज भी छोड़ा उनका फोन नहीं उठने के कारण मैंने अन्य विकल्पों को भी तलाश किया क्योंकि जो नम्बर था वह मेरे पास 12बर्ष पुराना था मनमे भ्रम था शायद बदल गया होगा अतः राजस्थान के हमारे साथी रामचंद जी जाट इम्पेक्ट से भी मदद मांगी उन्होंने भी मुझे 2 सम्पर्क दिए एक आदेश जी और दूसरे महेश पनपालिया जो धरा संस्थान से है ये लोग भी बाड़मेर से है

लेकिन जैसलमेर में इनका काम है के नंबर मुझे दिया महेश जी से भी मेरी बात हुई महेश जी ने तत्काल मदद करने का आश्वासन दिया कि मैं वहां के अधिकारियों से बात कर उन लोगों को अतिशीघ्र मदद कराने की कोशिश करता हूं मैंने सूरज का फोन नंबर महेश जी और लता बहन को व्हाट्सएप से भेज दिया उन्होंने स्थानीय वाट्सप गुरुप में मेरा नम्बर डाल दिया। इसी बीच वहां के किसान नेता गोपाल सिंह जी सुल्ताना का भी संपर्क नंबर मुझे मिला उनको भी मैंने मदद के लिए बात की उन्होंने भी आश्वासन दिया कि अगर कोई नहीं करेगा तो हम लोग पूरी मदद करेंगे

साथ ही जब पूरे पते और रास्ते की बात आई तो फिर उन लोगों को रास्ता बताने में भी दिक्कत हो रही थी कि लोग उनके पास तक कैसे पहुंचे फिर मैंने सूरज से कहा कि आसपास लोगों को देखो कि कोई स्थानीय आदमी है तो मेरी बात कराओ एक फिर एक स्थानीय साथी मिला उससे बात करने पर पता चला कि यह सब लोग जैसलमेर से रामगढ़ की तरफ पाकिस्तान बोर्डर को जाता है उसके बीच में मोखड़ा पड़ता है मोखड़ा से अलग रोड जाता है जो पी टी एम जाता है और वहां से चक जवाहर नगर 63 किलोमीटर दूर है

उसके बाद लता बहन का फोन आया कि उन्होंने वहां के समाज कल्याण विभाग के डिप्टी डायरेक्टर हिम्मतसिंह काव्या से बात की है और उनका नंबर मुझे व्हाट्सएप किया मैंने श्री हिम्मतसिंह जी से बात की उन्होंने बड़े सम्मान के साथ मेरे से बात किया और उन्होंने कहा कि आप चिंता ना करें मैंने जिला कलेक्टर महोदय एसडीएम महोदय वह भी अवगत करा दिया है और हम तत्काल जा करके उनको मदद करेंगे वहां के स्थानीय पत्रकार को भी लता बहन द्वारा बता दिया गया है ताकि उनकी मदद में कोई कोताही न बरतें

इस बीच में मैं लगातार सूरज से भी बात करता रहा और उसको कहा कि अपना फोन चार्ज रखना क्योंकि अब लगातार आपके पास लोगों के फोन आना शुरू हो जाएंगे इस पर सूरज ने बताया कि भाई साहब जब से आपने फोन लगाया है उसके बाद से चार पांच लोगों के मदद के लिए फोन आ रहे हैं और सूरज को भी मैंने जो स्थाई पता ढूंढा उस पते को याद कराया कि अब यही पता बताएं ताकि लोग आपके डेरे (स्थान)तक आसानी से पहुंच सकें

अभी सूचनाये आरही है कि कई गांव के लोग है वहाँ जिनकी सँख्या की सेकड़ो में होसकती है जिनमे ओछा पूरा तरफ के गोरस के 50 केऊपर होंगे पहाड़ी के झरेर के नजाने कितने पेट की आग बुझाने पाकिस्तान बोडर तक पहुच गये

“मायापुर गॉव के हम 13 लोग जैसलमर राजस्थान से रामगढ़ पाकिस्तान बोर्डर पर जीरा काटने का काम कर रहे थे। लोक डाडन के बाद हम कहीं नही जा सके और यही फस गये खाने का राशन भी नही था, जैसे तैसे महातमा गांधी सेवा आश्रम श्योपुर और एकता परिशद श्योपुर की टीम से मोबाइल सम्पर्क हुआ हमने अपनी परेशानी उन्हे बताई , उन्हाने यहां के लोगों से सम्पर्क कर हमारे भोजन और राशन की व्यवस्था कर दी है अब हमारे बच्चों के मुह पर मुस्कराहट है”। एकता परिशद टीम का धन्यवाद।

कांती बाई मुखिया
मायापुर

सैकड़ों किमी. लंबी कष्ट यात्रा कर घर पहुंचे गोदलियापुरा के मजदूरों ने सुनाई आपबीती

वीरपुर –

लोकडाउन ने ग्राम पंचायतों के मनरेगा कामों की पोल भी खोल कर रख दी है। पंचायतों में काम के अभाव में हजारों की संख्या में मजदूर दूसरे प्रदेशों में पलायन कर गए थे। जैसे ही देश मे कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने के लिए लोकडाउन लागू हुआ तो मजदूरों के लिए कष्टपूर्ण पदयात्रा भी शुरू हो गई। सैकडों किमी लंबी पदयात्रा कर मजदूर वापस लौटे हैं। ऐसी ही लंबी कष्टपूर्ण यात्रा कर लौटे वीरपुर तहसील के गोंदलियापुरा के मजदूरों ने आपबीती सुनाते हुए शासन प्रशासन पर सवालिया निशान लगाए।

उत्तर प्रदेश के जेतपुर से पैदल चलकर लौटे राम प्रसाद गोदलिया ने बताया बीरपुर तहसील के गोदलियापुरा से 25 फरवरी को उसके साथ बड़ी संख्या में मजदूरी को गए थे। यहां पंचायत में मनरेगा के काम ठप थे। स्थानीय स्तर पर रोजगार नहीं था, इसलिए दूसरे शहर जाना मजबूरी हो गया। रामप्रसाद ने बताया कि गांव के 80 वयस्क महिला पुरुषों के साथ 20 बच्चे शामिल थे। एक महीना 10 दिन वह वहां रहे। तीन दिन काम तलाशने में निकल गए। 10 दिन बारिश की भेंट चढ़ गए। 5 दिन कोरोना के कारण घर बैठकर खाया। जब लोकडाउन खुलने की संभावना नही दिखी तो सभी मजदूरों ने कुछ पैदल चलकर तो कुछ किराए में मनमाने रुपए देकर आए। घर पहुंचते पहुंचते जो रुपया जमा था वह भी खर्च हो गया। इस कष्टपूर्ण यात्रा में महात्मा गांधी सेवा आश्रम ने कई जगह इन मजदूरों को घर पहुंचाने ओर उन्हें भोजन उपलब्ध कराने में मदद की। गांधी सेवा आश्रम के प्रबंधक जय सिंह जादौन ने कहा कि, ग्राम पंचायतों में मनरेगा जैसे काम नही होने के कारण मजदूरों को पलायन करना पड़ा और अब लेकडाउन के चलते मुसीबतों में फंस गए है।

आदिवासी मालती ने जब की शिकायत तो दौड़ा दौड़ा आया राशन विकेता और घर देकर गया २ माह का राशन।

प्रशाशनिक लापरवाही, बैइमानी, भूख और कोरोना महामारी के वीच मददगार वनी एकता परिषदक अ

“मैं मालती आदिवासी पत्नि जगराम आदिवासी, कराहल के आमवाला सहराने में परिवार के साथ रहती हूॅ, जनवरी के महीने मे मैं परिवार सहित पलायन कर उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में मजदूरी करने चली गई थी। मजदूरी पुरी होने के वाद अपने घर लौटकर आ पाते उससे पहले ही कोरोना महामारी के चलते लॉॅकडाउन में वही पर फंस गये । मजदूरी के पैसे भी नही मिल पाये और जब हमारे पास राशन नही रहा तो हम जैसे तेसे कराहल आये , एकता परिशद साथियों ने हमारी जानकारी स्वास्थ विभाग के वी.एम.ओ. को देकर सभी सदस्यो की जांच करा कर गांव भेज दिया । लेकिन अव यह समस्यां खडी हो गई की मजदूरी तो मिल नही रही और वहां पर जो काम किया वह राशि वही खत्म हो गई । ऐसी स्थिति मे खायेगे क्या क्योकि रुपये तो पास है नही। परिवार के भरण पोषण को ले कर मैं काफी चिंतित थी।

मुझे याद आया कि हम तो दो माह से वाहर थे तो अपना राशन पी.डी.एस. की दुकान से अभी लिया नही है यह सोचकर मैं राशन लेने पी.डी.एस. दुकान पर पहुंच गई । जव मैंने अपना राशन देने के लिये विकेता सुल्तान यादव से कहा गया कि मे दो माह से यहां नही थी और अपना राशन नही ले गई हुॅं । मेरा राशन मुझे दे दो । तव विकेता सुल्तान यादव बोला कि तुम्हारा राशन तो कोई ले गया कम्प्युटर मे दर्ज है। मेने कहा कि मेरा तो पूरा परिवार मजदूरी करने आगरा गये थे तो राशन कौन ले गया। त दुकानदार सुल्तान यादव ने गुस्से में कहा गया कि यह तो मुझे नही पता लेकिन तुम्हारा राशन अव नही मिलेगा। यह सुनकर मेरी आंखों में आंसू निकल आये और अपने घर वापिस आ गई ।

मुझे समझ मे नही आ रहा था कि मैं अव क्या करु , मै हारी नही ओर मैं एकता

परिशद कराहल के नीरज श्रीवास्तव के पास पहॅच कर पूरी घटना भी वताई।”

जानकारी मिलने के बाद क्षेत्रीय समन्वयक नीरज श्रीवास्तव ने गांधी आश्रम ‘श्योपुर के सहयोग से उनके घर पर जाकर 10 क्रिग्रा. आटा ,तेल, दाल,नमक परिवार को दिया गया साथ ही स्वच्छता को ध्यान रखते हुये सावुन प्रदान किये गये । क्योकि मालती आदिवासी के परिवार मे दो वेटी (अंजू,संजू) और वेटे (ससेक,पपेक) है।

क्षे्त्रीय समन्वयक नीरज श्रीवास्तव ने कराहल ब्लांक फूड आंफीसर व्रजपाल गुर्जर से मोबाइल पर सम्पर्क कर वताया कि मालती आदिवासी पतिन जगराम आदिवासी का पूरा परिवार 3 माह से मजदूरी के लिये आगरा गया हुआ था और दो दिन पूर्व ही वापिस लौटा है जव मालती आदिवासी अपना 2 माह का राशन लेने गई तो विकेता सुल्तान यादव दवारा यह कहकर मना कर दिया गया कि तुम्हारा राशन तो कोई ले गया है और महिला को डाट कर भगा दिया है। यह सुनने के वाद व्रजपाल जी दवारा उस परिवार की आईडी मांगी गई जो कि उनको उपलव्ध करवाई गई। फूड आंफीसर दवारा मालती आदिवासी से वात करने की इच्छा जताई गई जिस पर नीरज श्रीवास्तव दवारा कांन्फेस कांल के तहत मालती आदिवासी से वात करवाई गई और फूड आॅंफीसर को मालती आदिवासी दवारा पूरी घटना वताई गई । इसके वाद फूड आंफीसर दवारा आशवासन दिया गया कि आपको आपका राशन मिल जायेगा।

उसी दिन शाम 6.30 बजे पर विकेता सुल्तान यादव स्वयं दौड़ा दौड़ा राशन लेकर मालती आदिवासी के घर पहुंच गया जिसमे 1 किवंटल गेंहू, 15 कि.ग्रा. चावल, 6 कि. ग्रा. शक्कर , 3 नमक की थैली दी गई । और मालती आदिवासी से जाकर वोला ”तैरी तो वहुत उंची पहुचं है तुने कौन से फोन लगवायो नेक डांट ही खा जाती जिस पर मालती आदिवासी ने कहा कि

“हम तो भूखे मर रहे थे मेरे परिवारा मे दो लडकियां, और दो वेटे , मे और मेरा आदमी हम इतने लोग भूखे मरते यदि महात्मा गांधी सेवा आश्रम संस्था दवारा हमको खादय साम्रगी नही दी जाती। तो ओर तुम कह रहो कि डांट खा जाती तुमने तो मना ही कर दिया था कि तूम्हारा राशन तो अव मिलेगा ही नही ”।

खाद्ध सुरक्षा से वंचित परिवारों को एकता परिषद ने किया चिन्हित

एकता परिषद संगठन भारत के विभिन्न राज्यों में वंचित वर्ग के बीच उनकी आजीविका और प्राकृतिक संसाधनों के लिये कार्य करता है। आज कोरोना संकट के बीच विपरीत परस्थितियों में फसे अधिकांश वंचितों,मजदूरों ने अपनी आजीविका खो दी है। एक वक्त के भोजन की भी उनके पास व्यवस्था नही है। इस महत्वपूर्ण अवधि में एकता परिषद ने कोरोना प्रभावित परिवारों, प्रवासी मजदूरों, भूमिहीन / एकल महिला / वृद्ध / रोग ग्रस्त / दैनिक मजदूरी पर निर्भर परिवार, पलायन से वापिस आये परिवार जिनके पास राशन नही है, वह परिवार जिनके सदस्य पलायन के बाद वापिस नही आये हैं उन सभी के लिये खाद्ध किट सामग्री (दाल – 2 किग्रा, खाद्ध तेल 1 लीटर, शक्कर – 1 किग्रा और गेहूँ का आटा – 15 किग्रा या चावल – 15 किग्रा) अल्प समय के लिये प्रदान करने की नीति बनाई है। देश के 11 राज्यों के 65 जिलों के 2765 गॉव के 79412 परिवारों तक पहुॅचने की योजना है। राज्यों की स्थितियों के अनुसार परिवारों की संख्या आगे बढ़ सकती है।

क	राज्य	जिला संख्या	गांव संख्या	परिवार संख्या
1	मध्यप्रदेश	18	2253	69300
2	राजस्थान	1	25	500
3	उत्तर प्रदेश	2	30	750
4	छत्तीसगढ़	5	58	612
5	बिहार	12	120	1800
6	झारखंड	5	50	500
7	उड़ीसा	10	80	1600
8	असम	4	75	2100
9	मणिपुर	5	32	550
10	तमिलनाडु	2	32	1500
11	केरला	1	10	200
		65	2765	79412

आवश्यक सूचना : साथियों मजदूर परिवारों के पलायन संबंधी जानकारी आगामी संस्करण में दी जायेगी। पलायन से संबधित जानकारी आप हमे दिये गये फोर्म पर साझा कर सकते हैं।

एकता परिषद

संसाधन केन्द्र, पुरानी छावनी थाने के पास
ए.बी. रोड पुरानी छावनी ग्वालियर
सम्पर्क - 9993592425

Contact Persons : Ran Singh Parmar 9993592425, Email: mgsa.india@gmail.com ,
www.mahatmagandhisevaashram.org, www.ektaparishad.org